Indian J. Soc & Pol. 03(01): 2016:45-48 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127 (O)

भारत–चीन सम्बंध : बदलते रिश्ते

ममता मणि त्रिपाठी[1]

[1]अध्यक्ष,राजनीति शास्त्र विभाग,श्री भगवान महावीर पी0जी0 कॉलेज,पावानगर फाजिलनगर,कुशीनगर

ABSTRACT

भारत और चीन सम्बंध 21वीं सदी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और रोचक द्विपक्षीय सम्बंधों में से एक है। दोनों विश्व की प्राचीनतम सभ्यताएँ हैं जो लम्बे समय तक एक राष्ट्र के रुप में सत्त विद्यमान रहने के लिए विश्व इतिहास में दर्ज है। दोनों देशों के बीच कई सदियों से सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक सम्बंध रहे हैं। दोनों देशों के तीर्थयात्रियों एवं अन्य यात्रियों के बीच आपसी जुड़ाव और गहन होगा। इन यात्रियों में फाहियान, सुंगयुन, ह्वेनसांग, कुमारजीव, जिनगुप्त, जिनभद्र और बौद्धिसत्व मुख्य हैं। भारत और चीन दोनों का एक स्वतंत्र राष्ट्र और आधुनिक राजनीतिक बनावट के रुप में उभार लगभग एक साथ हुआ। भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ और चीन 1949 में साम्यवादी देश के रुप में अस्तित्व में आया किन्तु अपनी स्वतंत्रता के बाद ये दोनों देश अपने मजबूत विरासत एवं समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं का भरपूर लाभ नही उठा सके। पिछले 68 वर्ष में दोनों देशों के सम्बंध में काफी उतार चढ़ाव रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र में भारत चीन सम्बंधों के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सम्बंधों को वर्णित किया गया है।

KEYWORDS: *अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, एल ओ सी, सामरिक सम्बन्ध, एम एफ एन*

भारत और चीन के बीच 4,057 किमी0 लम्बी सीमा रेखा है जिसे वास्तविक नियन्त्रण रेखा (Line of Actual Control-LOAC) के नाम से जाना जाता है। यह सीमा रेखा जम्मू कश्मीर में भारत अधिकृत क्षेत्र और चीन अधिकृत क्षेत्र आक्साई चीन को पृथक करती है। यह लद्दाख, कश्मीर, उत्तराखण्ड, हिमाचल, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश से होकर गुजरती है। भारत और चीन के वैश्विक कृटनीतिक एवं आर्थिक प्रभाव से परिणामी विकास के फलस्वरुप दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सम्बंधों का महत्व बढ़ गया है। द्विपक्षीय सम्बंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से भारत चीन के बीच संयुक्त रुप से पंचशील (शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धान्तों) पर समझौता वर्ष 1954 में हुआ था इस समझौते के अनुसार–

1. एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना।
2. एक दूसरे के आंतरिक विषयों में हस्तक्षेप न करना।
3. एक दूसरे के विरुद्ध आक्रामक कार्यवाई न करना।
4. समानता और परस्पर लाभ की नीति का पालन करना।
5. शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति में विश्वास रखना आदि बातें शामिल थी।

19वीं शदी के दौरान चीन की ब्रिटिश सरकार के साथ बढ़ते अफीम व्यापार के कारण अफीम युद्ध शुरु हो गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, भारत और चीन ने इम्पोरियल जापान को आगे बढ़ने से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

1954 में चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई भारत आये। वर्ष 1962 में चीन द्वारा किये गये आक्रमण की परिस्थिति के कारण द्विपक्षीय सम्बंधों को गंभीर धक्का लगा था। विवादित हिमालय सीमा युद्ध के लिए एक मुख्य बहाना था लेकिन अन्य मुद्दों जिनमें चीन में वर्ष 1959 के तिब्बती विद्रोह के बाद जब भारत ने दलाई लामा को शरण दी तो भारत चीन सीमा पर हिंसक घटनाओं की एक श्रृंखला शुरु हो गयी। चीन द्वारा युद्ध विराम की घोषणा और साथ ही विवादित क्षेत्र से अपनी वापसी की घोषणा की तब युद्ध खत्म हो गया। भारत और चीन नें राजदूतीय सम्बंधों की पुनर्स्थापना अगस्त 1976 में की थी। उच्च राजनैतिक स्तरीय सम्पर्कों का नवीनीकरण तत्कालीन विदेश मंत्री श्री ए0बी0 बाजपेयी की फरवरी 1979 की यात्रा से हुआ था। राजीव गाँधी द्वारा दिसम्बर 1988 में चीन की यात्रा आगे के सम्बंधों के लिए मील का पत्थर साबित हुई। इस यात्रा की अवधि में दोनों पक्ष सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सम्बंधों के विस्तार और विकास पर सहमत हुए थे। सीमा समाधान हेतु एक संयुक्त कार्यदल (JWG) तथा संयुक्त आर्थिक दल (JEG) आदि की स्थापना पर भी सहमति हुई थी। दोनों देशों की वैश्विक अर्थव्यवस्था एवं राजनीति में बढ़ती भूमिका एवं महत्वाकांक्षा के कारण आपसी रिश्ते कभी प्रगाढ़ होते प्रतीत होते हैं तो कभी कड़वे होते दिखायी देते हैं। एक तरफ व्यापारिक और आर्थिक सम्बंध दिनों दिन बढ़ते चले जा रहे हैं तो दूसरी तरफ सीमा सम्बंधी विवाद भी नए स्वरुप में उत्पन्न हो रहे हैं। सामायी क्षेत्रों में शांति बनाए रखने पर सहमति के बावजूद चीन ने इसका उल्लंघन करते हुए अरुणाचल प्रदेश की सीमा पर पेट्रोलिंग में वृद्धि करना रहा है वर्ष 2013 में चीनी सेना द्वारा कई बार भारतीय सीमा का उलंघन किया गया जिसके कारण तनाव काफी बढ़ गया था।

जब से नई दिल्ली में सत्ता परिवर्तन हुआ तथा चुनाव प्रचार के दौरान भारतीय क्षेत्र में चीनी घुसपैठ की नरेन्द्र मोदी द्वारा बार–बार कड़ी आलोचना के किए जाने के बावजूद

1: Corresponding Author

भारतीय सरकार को लुभाने के लिए चीन लगातार सकारात्मक संदेश देता आ रहा है। चीनी प्रधानमंत्री ली केकिआंग आम चुनाव में भाजपा की जीत पर सबसे पहले बधाई देने वाले नेता थे। 08–09 जून को चीन के विदेश मंत्री बांग यी ने भारत आकर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा विदेश मंत्री के साथ वार्ताएँ की। दोनों देशों ने वर्ष 2015 में 100 अरब डालर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य रखा है। भारत ने इन वार्ताओं में 2013 में हुए 65 अरब डालर के द्विपक्षीय व्यापार में 31 अरब का व्यापार घाटा होने पर चिंता जतायी है। उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी पंचशील के 60 वर्षों के स्मृति में आयोजित समारोह में भाग लेने के लिए 26–30 जून तक चीन के दौरे पर रहे। 2013 की मनमोहन सिंह की यात्रा के दौरान भारत और चीन के मध्य सीमा–रक्षा सहयोग को देखा जा सकता है। इस ठोस समझौते में प्रस्तावित है कि संभवतः सभी सेक्टरों में दोनों पक्षों के सीमाबलों के बीच एक निश्चित व्यवस्था के रुप में देखा जा सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यात्रा के एक माह के बाद ही चीन ने जून 2015 में न्छ में लखवी को रिहा किये जाने के पाकिस्तानी कदम लाने के लिए प्रस्ताव लाया था जिस पर चीन ने वीटो कर दिया था। भारत की शिकायत थी कि 26/11 के मुम्बई प्रयासों के मुख्य अभियुक्त को रिहा कर पाकिस्तान नें संयुक्त राष्ट्र परिषद के संकल्प 1267 का उलंघन किया है। चीन और पाकिस्तान के मध्य रणनीतिक सम्बंध पहले से ही विद्यमान है। लखवी मामले में चीन के वीटो को भारत में दगाबाजी या गैर दोस्ताना हरकत के रुप में देखा जा सकता है। भारत भी चीन की गतिविधियों को देखकर सीमा से जुड़े सड़कों के आधुनिकीकरण हेतु 3 अरब डालर आवंटित की है। सुखोई विमान भी पूर्वोत्तर राज्यों में तैनात किया गया है। अगस्त 2014 में भारत सरकार नें आधुनिक आकाश मिसाइलों को चीनी सीमा पर तैनात करने का निर्णय लिया। भारत चीन में कड़वाहट हटने के बजाय बढ़ रहा है जैसे : अरुणाचल प्रदेश में एक परियोजना के लिए एशियाई विकास बैंक के वित्तीयन का विरोध अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेन्सी में भारत अमरीका, परमाणु समझौते को लागू होने से रोकने के लिए कूटनीतिक प्रयास अरुणाचल प्रदेश के लोगों को भारतीय मामने से इंकार, कश्मीरी लोगों को अलग से वीजा प्रदान करना सांगयो नदी पर भी बांध बनाने की परियोजना है। वर्ष 2015 को दोनों ही देशों द्वारा एक दूसरे के वर्ष (इयर ऑफ चाइना/ इयर ऑफ इण्डिया) के रुप में मनाए जाने का निर्णय लिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 6वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के अतिरिक्त समय में फोर्टलिजा ग्राजील में 14 जुलाई 2014 को चीन के राष्ट्रपति से मुलाकात की। मई 2015 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चीन की यात्रा की। यात्रा के दौरान 10 अरब डालर से अधिक के 24 करारों पर हस्ताक्षर किये गये। इनमें भारत में 'महात्मा गाँधी कौशल विकास संस्थान' की स्थापना चैन्नई व चेंगदु में कॉन्सुलेट की स्थापना शामिल है।

भारत चीन आर्थिक सम्बंध : भारत चीन के बीच 1978 में व्यापार को आरम्भ किया गया। वर्ष 1984 में दोनों देशों ने सर्वाधिक तरजीही राष्ट्र यानी (Most Favoured Nation Agreement) पर हस्ताक्षर किया। वर्ष 2008 में चीन के साथ व्यापार 51.8 अरब डालर था। वर्ष 2000 में 2.92 अरब डालर का व्यापार वर्ष 2011 में 73.9 अरब डालर का हो गया। वर्ष 2014–15 में द्विपक्षीय व्यापार में मामूली गिरावट आयी और 72.34 अरब डालर था। 2014–15 में चीन को भारतीय निर्यात 11.95 अरब डालर था जबकि चीन से आयात 60.39 अरब डालर था। चीन के साथ व्यापार घाटे को कम करने के लिए सरकार प्रयासरत है। ब्रिक्स और जी–20 ऐसे मंच हैं जिसके भारत और चीन सदस्य हैं और इन मंचों पर दोनों देश आर्थिक सहयोग से सम्बंधित विचार विमर्श करते हैं इसके अलावा द्विपक्षीय आर्थिक विचार–विमर्श के लिए कई संस्थागत तंत्र विद्यमान हैं।

भारत–चीन सम्बंधों में आर्थिक व्यापारिक तत्व ही वह डोर है जो दोनों को नजदीक लाता है। भारत चीन के बीच मई 2015 की सम्मेलन बैठक ने सम्बंधों में अर्थव्यवस्था को प्राथमिकता दी है आर्थिक परिदृश्य ही है जो गहन निवेश और व्याप्त के माध्यम से साझी समृद्धि के क्षेत्र में एशिया की दो महाशक्ति को नजदीक ला रहा है। इसी तरह प्रधानमंत्री (भारत) ने बीजिंग में कहा था हमनें अपनी आर्थिक साझेदारी को उच्च स्तर की महत्वाकांक्षा स्तर पर निर्धारित किया है हम बहुत बड़े द्विपक्षीय अवसरों और कई चुनौतियों जैशे शहरीकरण को देखते हैं। राष्ट्रपति शी और प्रीमियर ली के साथ अपनी वार्ता में उन्होंने कहा दोनों नेता हमारे Make in India मिशन और इन्फ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में चीन के भागीदारी का समर्थन करते हैं।

नरेन्द्र मोदी ने जून 2015 में चीन की यात्रा की। आज भारत–चीन पर्यावरण संरक्षण व अंतरिक्ष क्षेत्र में तकनीकी सहयोग बढ़ाने का इच्छुक है। आज भारत चीन के बीच 4T-Tibbet frCcr T-Territorial Disputes, T-Trade, T-Technical cooperation का विशेष महत्व है।

सांस्कृतिक सम्बंध : भारत चीन के बीच सांस्कृतिक सम्बंध आदान प्रदान स्वाधीनता संघर्ष काल में थे। 20वीं शदी के प्रारम्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर चीन की यात्रा पर दो बार 1924 और 1929 में गये थे। डॉ0 द्वारकानाथ कोटनीस जिसका अवशेष आज भी उत्तरी चीन के हेबेई प्रान्त के शहीद स्मारक में उनकी समाधि विद्यमान है। जिन्होंने चीन जापान युद्ध में चीनी लोगों की सेवा करते हुए अपना जीवन बलिदान कर लिया था। भारत चीन सांस्कृतिक सहयोग की व्यापक संरचना का समायोजन सांस्कृतिक आदान प्रदान (CEU) के क्रियान्वयन का प्रावधान है। संशोधित पर हस्ताक्षर दिसम्बर 2010 में चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाऊ की भारत यात्रा की अवधि में किये गये थे। दोनों पक्ष के नेतृत्व ने वर्ष 2011 को आदान प्रदान वर्ष के रुप में घोषित किया था।

रक्षा सम्बंध : भारत चीन के बीच रक्षा सम्बंधों में गर्मजोशी का रुख दिसम्बर 1988 में प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी की यात्रा के बाद स्थापित हुआ था जब उन्होंने सीमा के मुद्दे पर एक संयुक्त कार्यदल के गठन का निर्णय किया। दिसम्बर 1988 और जून 1993 के बीच की अवधि में सीमा पर व्यापक तनावों की आपसी विश्वास बहाली के उपाय Confidence Building Measures-(CBMS) के माध्यम से कम किया गया था। इस अवधि में '7 दौरों' का आयोजन किया गया। सीमा क्षेत्र में वास्तविक नियन्त्रण रेखा (LOAC) के आसपास दोनों पक्षों द्वारा वर्ष 1993 और वर्ष 1996 में हुए समझौते के अनुसार शांति एवं शांति व्यवस्था बनाए रखा गया है।

सहयोग के विभिन्न मंच : वर्ष 2006 में दोनों देशों के बीच रणनीतिक भागीदारी आरंभ हुआ। छठे दौर की सामरिक वार्ता अप्रैल 2014 में सम्पन्न हुआ। सीमा के मसले पर भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों– विशेष प्रतिनिधि तंत्र (Special Representatives Mechanism SRM) की अब तक 13 बार बैठक हो चुकी है। बैठक में दोनों देशों ने सीमा क्षेत्र में अमन एवं शांति बनाए रखने से सम्बंधित महत्वपूर्ण सीमा सम्बंधी मामलों का निराकरण करने हेतु सीमा मामलों पर परामर्श एवं समन्वय के लिए कार्यचालन तंत्र (Joint Working Mechanism) स्थापित करने पर सहमति जतायी थी। दोनों पक्षों ने जून 2012 में भारत चीन सीमा मामलों सम्बंधी परामर्श एवं समन्वय हेतु कार्यतंत्र की स्थापना की। भारत चीन उच्च स्तरीय मीडिया फोरम का आयोजन नई दिल्ली में 16 सितम्बर 2013 को हुआ। जून 2003 में चीन यात्रा के दौरान भारतीय अध्ययन समूह का गठन किया गया था। चीन के प्रधानमंत्री श्री वेन चिआवाओ की अप्रैल 2005 में भारत चीन वित्तीय वार्ता आरम्भ करने हेतु एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किया गया था यह वार्ता 12–18 महिने में आयोजित होती है। भारतीय सेना और पी.एल.ए. के बीच हैंड इन हैंड युद्धाभ्यास का आयोजन किया गया था। ऐसा प्रथम संयुक्त युद्धाभ्यास 4–13 नवम्बर 2013 को चीन के झाग्हु में आयोजित हुआ। द्विपक्षीय मंचों के अलावा कई ऐसे मंच हैं जहाँ भारत एवं चीन आपसी वार्ता करते हैं जिनमें प्रमुख हैं : रुस–भारत–चीन मंच, ब्रिक्स, जी–20।

विवाद एवं संघर्ष के क्षेत्र व कारण : चीनी सेना ने भारत के साथ 1962 में गतिरोध उत्पन्न करने के बाद से पहली बार लद्दाख सेक्टर की काराकोरम रेंज से सटी अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर निर्माण शुरु किया। सरकार के अनुसार इसका प्रयोग भारतीय सेना की गतिविधियों पर नजर रखने के उद्देश्य से कैमरा लगाने के लिए कहा जा सकता है। कारकोरम दर्जा वास्तविक नियन्त्रण रेखा के तौर पर जाना जाता है। इस दर्रे के पश्चिम से स्थित सियाचिन ग्लेशियर क्षेत्र के नियन्त्रण को लेकर पाकिस्तान और भारत के बीच विवाद में यह क्षेत्र बड़ी भौगोलिक भूमिका भी अदा करता है। चीन ने दलाई लामा की अरुणाचल प्रदेश की यात्रा का भी विरोध किया। वर्ष 2007 में चीन ने अरुणाचल प्रदेश के अधिकारियों को वीजा देने से इस आधार पर इंकार कर दिया था कि अरुणाचल प्रदेश चीन का भाग है इसलिए यहाँ के लोग उसके नागरिक हैं। चीन भारत पर लगातार दबाव भी बना रहा है कि नेपाल भारत सीमा पर आवागमन के नियम सख्त किये जाए। पी.ओ.के. में विवादास्पद नीलम झेलम प्रोजेक्ट तथा बुंजीडैम प्रोजेक्ट में चीन सहायता प्रदान कर रहा है। इसके अतिरिक्त चीन ने इस क्षेत्र में कारकोरम हवाई एवं 16 हवाई पट्टियों का निर्माण भी किया है।

सन् 1914 में भारत की ब्रिटिश सरकार और तिब्बत के बीच शिमला समझौते के अन्तर्गत मैकमोहन रेखा अस्तित्व में आयी परन्तु यह 1935 में लागू हुई। सन् 1937 में सर्वे ऑफ इण्डिया के एक मानचित्र में मैकमोहन रेखा को आधिकारिक भारतीय सीमा रेखा के तौर पर दिखाया गया। भारत इसे चीन के साथ अपनी सीमा मानता है जबकि चीन शिमला समझौता को ही स्वीकार नही करता है। उसका कहना था कि तिब्बत स्वतंत्र राज्य नही था और किसी भी प्रकार का समझौता करने का उसके पास कोई अधिकार नही था। 1962 के भारत–चीन युद्ध के दौरान कुछ समय के लिए चीनी फौजों ने अधिकार जमा लिया। अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रचलित भारतीय उपमहाद्वीप शब्द को लेकर पाकिस्तान के अलावा चीन भी सवाल उठाता रहा है। अक्साई क्षेत्र को लेकर भी विवाद बना हुआ है। चीन ने जब 1990 के दशक में तिब्बत पर कब्जा किया तो वहाँ कुछ क्षेत्रों में विद्रोह भड़क गये जिनसे चीन और तिब्बत के बीच के मार्ग को कट जाने का खतरा बना हुआ है। 1962 का भारत–चीन युद्ध भी एक कारण है वह रेखा जो कश्मीर के क्षेत्रों को अक्साई चिन से अलग करती है वास्तविक नियन्त्रण रेखा के रुप में जानी जाती है। अक्साई चिन भारत और चीन के बीच चल रहे दो मुख्य सीमा विवाद में एक है चीन के साथ अन्य विवाद अरुणाचल प्रदेश से सम्बंधित है।

भारत चीन के मध्य अरुणाचल प्रदेश विवाद महत्वपूर्ण है वर्ष 1972 से पूर्व अरुणाचल प्रदेश नेफा ;छम्थ्।द्ध के नाम से जाना जाता है वर्ष 1972 में इसे भारत के संघीय राज्य का दर्जा मिला और वर्ष 1987 में यह भारत का अभिन्न हिस्सा बना। हाल ही में चीन द्वारा अरुणाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर में स्टेपल वीजा देने को लेकर सम्बंधों में काफी तनाव आया। उल्लेखनीय है कि चीन ने स्टेपल वीजा देने की शुरुआत 2008 से की थी। चूकि चीन पूर्वी पश्चिमी और मध्य अरुणाचल प्रदेश के भाग को विवादित मानता है अतः इस मरह के कार्यों में वह अरुणाचल पर अपने आधिपत्य को बीच–बीच में पुष्टि करता रहता है। अरुणाचल प्रदेश का तवांग शहर भारत और चीन के बीच तनातनी की काफी पुरानी वजह रहा है। 17वीं सदी में तत्कालीन तिब्बती बौद्ध लामा द्वारा बसाए गये इस शहर को चीन अपने पास रखना चाहता है क्योंकि भारत के साथ सैन्य दृष्टि से इसकी स्थिति तिब्बत, भूटान सीमा के पास काफी अहम है। 1953 के पूर्व भारत के नक्शें में तवांग को नही दिखाया गया है और तवांग का विवाद अपेक्षाकृत नया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन हमेशा से पाकिस्तान का अच्छा मित्र रहा जबकि पाकिस्तान एवं भारत की शत्रुता जगजाहिर है। भारत पाक विवादों और युद्धों में चीन पाकिस्तान का समर्थन करता रहा है। प्रधानमंत्री के अरुणाचल प्रदेश के दोरे पर चीन ने उस समय विरोध किया जब पाकिस्तानी प्रधानमंत्री युसूफ रजा गिलानी चीन गए थे। पहले 9/11 और 26/11 के बाद समस्त विश्व में पाकिस्तान के आतंकी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप सिद्ध हुए है।

हालिया प्रयास व सहयोग :

1. दोनों देशों नें वर्ष 2005 में शांति एवं समृद्धि के लिए सामरिक एवं सहकारी भागीदारी की स्थापना की थी।

2. भारत और चीन में भारत गणराज्य तथा चीन लोक गणराज्य के बीच 21वीं सदी के साझी विजय पर एक संयुक्त दस्तावेज पर हस्ताक्षर भी किये हैं।

3. इसके अलावा 29 नवम्बर 1946 को चीन भारत सीमा क्षेत्रों में विश्वास निर्माण उपायों के कार्यान्वयन के लिए तौर तरीकों का चीन और भारत के बीच प्रोटोकाल पर हस्ताक्षर किये गये।

4. संस्कृति के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए दोनों पक्षों ने वर्ष 2011 को भारत चीन आदान प्रदान वर्ष घोषित किया गया।

5. आर्थिक परिदृश्य के नतीजे महत्वपूर्ण रहे हैं और कार्य प्रगति में है। राष्ट्रपति शी जिंगपिंग के 2014 में भारत की यात्रा के दौरान भारत में चीन द्वारा अगले 5 सालों में भारत में 20 मिलियन डालर्स के निवेश के वादे के आधार पर शंघाई में दोनों देशों के बीच 22 विलियन डालर्स के व्यापारिक समझौते हुए।

6. 10 जून को FICCI द्वारा आयोजित चीन–भारत इण्डस्ट्रीयल को–आपरेशन सेमिनार में ले ने कहा चीन ने हाल ही में मेड इन चीन 2025 अभियान की शुरुआत हुई।

अतः स्पष्ट है कि चीन अपनी अतीत की नीतियों को भुलाकर बदली परिस्थितियों को समझ रहा है क्योंकि भारत सैनिक दृष्टि से मजबूत है और एशिया की आर्थिक शक्ति के रुप में उभर रहा है दूसरी तरफ अमेरिका द्वारा चीन के विरुद्ध सामरिक चित्र बनाए जाने से चीन को भी भारत के सहयोग की आवश्यकता है। अतः भारत–चीन परस्पर सहयोग से एशिया में स्थिरता ला सकते हैं। दिवंगत नेता नेंग श्याओंग का पसंदीदा तथ्य था कि नदी पार करने के लिए पत्थरों से भर देना ही सबसे अच्छा तरीका है भारत से रिश्तों के मामले में भी चीन का रवैया ऐसा ही लगता है। वह धीरे–धीरे आगे बढ़ने की चीन की नीति से भी मेल खाता है आज भारत चीन सम्बंधों को न किसी पश्चिमी विरोधी गठबंधन के रुप में देखा जा सकता और न ही जापान के विरुद्ध त्रिकोण के रुप में चित्रित किया जा सकता है और न ही ऐसा क्षणभंगुर रिश्ता जो कभी भी टूट सकता है बल्कि आज ये दो महत्वपूर्ण महत्वाकांक्षी क्षेत्रीय महाशक्तियाँ अपने साझे हितो, वैश्विक स्थिरता एवं चुनौतियों एवं सन्तुलन के लिए परस्पर सहयोगी बन गये हैं। क्योंकि जहाँ चीन को एशिया में अपनी दावेदारी मजबूत करने के लिए भारत के समर्थन की जरुरत है वहाँ भारत को निवेश सीमा समाधान और सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए चीन की जरुरत है।

संदर्भ

दीक्षित, जे.एन.(2007) *भारतीय विदेश नीति* प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

दीपक, बी0आर0 (2011) *इण्डिया चाइना रिलेशंस, इन द फर्स्ट हॉफ इण्डियाज–न्यू ट्वेंथियथ सेंचुरी* ए.बी0एच. दिल्ली

मोहन, सी0 राजा (2003), *क्रोसिंग दि रुबिकान दि शेपिंग ऑफ इण्डियाज न्यू फोरेन पॉलिसी* वाइकिंग, नई दिल्ली

जेटली, नैसी (संपा0)(2011) *इंडियाज फारेन पॉलिसी चैलेंजेज एण्ड प्रास्पेक्टस* विकास पब्लिशर्स, नई दिल्ली

पंत, हर्ष बी0,(2009) *इंडियाज फारेन पॉलिसी इन ए इनिपोलर वर्ल्ड* रुटलेइंग, नई दिल्ली

भारत 2015 प्रकाशन विभाग भारत सरकार नई दिल्ली 2015।

चौधरी, डॉ0 अनीता *बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भारत चीन सम्बंधों का अध्ययन,* राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

योजना, जुलाई 2015 मनीष चन्द का लेख भारत चीन सम्बंध बदलते रिश्ते

सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, नवम्बर 2015

इण्डिया टूडे सितम्बर 2014

इण्डिया टूडे मई 2015

हिन्दुस्तान समाचार पत्र 15 मई 2015

हिन्दुस्तान समाचार पत्र 16 मई 2015

हिन्दुस्तान समाचार पत्र 17 मई 2015